विद्यापति के गीतिकाव्य में बिम्बों का वर्गीकरण

डॉ0 भाकुन्तला कुमारी

संवेदनाओं या इन्द्रियानुभूतियों के परिप्रेक्ष्य में काव्यगत बिम्बों का विवेचन अब प्रायः स्वीकार्य हो गया है। अध्येताओं ने चूँकि ऐन्द्रियता को आधार मानकर काव्य भाषागत मूर्तता के मूल्यांकन को बहुत दूर तक मान्यता दे दी है, अतः पाँच ''विषयों'' एवं उनसे सम्बद्ध पंचेन्द्रियों–आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा को दृष्टिपथ में रखते हुए बिम्बों को पाँच वर्गों में विभक्त किया गया है। रूप, शब्द, गन्ध, रस एवं स्पर्श से संबद्ध संवेदनाएँ क्रमशः नेत्र, कान, नाक, रसना या जिह्वा तथा त्वचा से जुड़ी हैं। उक्त विषयों और इन्द्रियों की पारस्परिक निर्भरता सर्वज्ञात है।